5

पूर्व प्राथमिक शिक्षा
भारतीय संदर्भ में आवश्यकता

पद्मा यादव*

यदि हम पूर्व प्राथमिक शिक्षा के वर्तमान ढाँचे को देखें तो पता चलता है कि एक ओर व्यक्तिगत प्रबंध तंत्र द्वारा व्यावसायिक स्तर पर शहरी क्षेत्रों में चलाए जा रहे नर्सरी स्कूलों की भरमार हो गई है और दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों तथा शहर की झुग्गी-बस्ती में रहने वाले बच्चों के लिए व्यवस्थित और सुनियोजित प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था का पूर्ण अभाव है। नर्सरी स्कूलों में से अधिकतर केवल प्राथमिक स्कूलों का लघु रूप बनकर रह गए हैं, जहाँ छोटे बच्चों को औपचारिक रूप से पढ़ने-लिखने तथा गणित की शिक्षा दी जाती है। इस तरह बच्चों पर अनावश्यक बोझ व दबाव पड़ता है। इसके अलावा, कुछ नर्सरी स्कूल बच्चों को ऐसी शिक्षा देने का प्रयास करते हैं जो बच्चों को उनके परिवेश व पृष्ठभूमि से नहीं जोड़ पाते।

अत: आज आवश्यकता इस बात की है कि 3–6 आयुवर्ग के बच्चों की क्षमता, आवश्यकता तथा ग्रहणशीलता के स्तर को देखते हुए पूर्व प्राथमिक शिक्षा का ऐसा कार्यक्रम तैयार किया जाए जो बच्चे के परिवेश व परिस्थितियों के अनुकूल हो। साथ ही वह उनके विकास को गति प्रदान करे।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर बल देने तथा इसके स्तर को ऊँचा उठाने में सुनियोजित कार्यक्रम का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि इसके द्वारा बच्चे पढ़ने-लिखने की तैयारी के लिए ज़रूरी कौशलों से युक्त हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे आगे की शिक्षा को सरलता से ग्रहण कर पाते हैं।

जिन मूल्यों, मनोवृत्तियों, वांछित संस्कारों एवं आदतों का बीजारोपण हम बच्चे में करते हैं, बड़े होने पर उसके व्यक्तित्व में हम उन्हीं का विकसित रूप पाते हैं। आठ साल से नीचे आयुवर्ग को प्रारंभिक बाल्यावस्था कहते हैं। इसमें शैशव काल, विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक प्राथमिक शिक्षा वर्ष आते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा मानव संसाधन विकास की एक आवश्यकता है। अत: पूर्व प्राथमिक शिक्षा के महत्त्व, स्वरूप, क्रियाकलापों और बालक-बालिकाओं पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करना आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 का विचार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 में पूर्व प्राथमिक शिक्षा को बहुत महत्त्व दिया गया। इसमें प्रारंभिक बाल

* *प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

कार्यक्रम के सभी पहलुओं पर ज़ोर दिया गया। साथ ही इसमें देखभाल को भी जोड़ा गया है, जिससे इसे प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा कहते हैं। देखभाल के प्रमुख तत्व हैं – स्वास्थ्य और पौष्टिक आहार।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा को मानव संसाधन विकास में एक महत्वपूर्ण निवेश के रूप में स्वीकार किया है। प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा में समुदाय की सहभागिता पर ज़ोर दिया गया है। साथ ही समेकित बाल विकास योजना (I.C.D.S.) और प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा (E.C.C.E.) कार्यक्रमों के सभी स्तरों के समन्वय पर भी बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने बहुत कम उम्र के बच्चों के लिए औपचारिक शिक्षा के दबाव (जैसे — पढ़ने-लिखने और गणित पढ़ाने) के प्रति चेतावनी दी है। इसमें खेल और क्रियाकलाप की गतिविधियों को अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दिया गया है। इस नीति में गरीब बच्चों की देखभाल और प्रोत्साहन पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2000

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2000 के अनुसार पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करना है और इसलिए बाल देखभाल और शिक्षा, शिक्षा का एक प्रमुख तत्व है। समेकित बाल विकास योजना के अंतर्गत आँगनवाड़ियों में, पूर्व प्राथमिक शिक्षा आँगनवाड़ी की मुख्य सेवाओं में से एक है। यह अन्य कई रूपों में भी उपलब्ध है; जैसे – नर्सरी, किंडरगार्टन कक्षाएँ आदि, जो सरकारी और निजी, दोनों ही क्षेत्रों में एक-दूसरे से कुछ भिन्न हैं। इस तथ्य को स्वीकारना होगा कि शिक्षा की यह अत्यंत आरंभिक अवस्था बच्चे के व्यक्तित्व-निर्माण की अत्यंत नाजुक अवस्था है और इसका असर बच्चों की बाद की शिक्षा पर होता है। *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2000* में संस्तुति की गई है कि दो वर्ष की पूर्व प्राथमिक बाल देखभाल एवं शिक्षा 4 से 6 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को उपलब्ध कराई जाए, जिसमें किसी प्रकार का औपचारिक शिक्षण और मूल्यांकन नहीं होगा और जो स्कूल की तैयारी के लिए अनुभव प्रदान करेगी।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 में कहा गया है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था स्तर, छह से आठ साल तक की उम्र का समय, बहुत ही संवेदनशील और निर्णायक होता है जब जीवनभर के विकास के आधार और समस्त संभावनाओं के द्वार खुलते हैं। छोटे-छोटे बच्चों की उचित देखभाल हो, उनके सर्वांगीण विकास के लिए पर्याप्त अवसर और अनुभव दिए जाएँ। सर्वांगीण विकास में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावात्मक विकास एवं विद्यालय के लिए तैयारी शामिल हैं। यह एक मानी हुई बात है कि बच्चों में सीखने और अपने आस-पास की दुनिया को समझने की स्वाभाविक इच्छा होती है। इसलिए शुरुआती वर्षों में अधिगम बच्चों की अभिरुचियों और प्राथमिकताओं के मुताबिक होना चाहिए और बच्चों के अनुभव पर आधारित होना चाहिए न कि औपचारिक।

शुरुआती वर्षों की शिक्षा में वही भाषा प्रयोग में लाई जानी चाहिए जिससे बच्चा अपने परिवेश

में परिचित हो। क्योंकि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के कार्य-क्षेत्र में जो बच्चे आते हैं उनका समूह बड़ा ही विषम जातीय होता है जिसमें शिशुओं से लेकर नर्सरी के विद्यार्थी होते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि उनके लिए आयोजित की गई गतिविधियाँ और अनुभव विकासात्मक दृष्टिकोण से उपयुक्त हों। बच्चों की असमर्थताओं की जल्द से जल्द की गई पहचान और उपयुक्त प्रेरणा देने से अपंगता से होने वाले अहित को रोकने में काफ़ी मदद मिल सकती है। इस स्तर पर बच्चों को ज़बरदस्ती लिखने, पढ़ने और अंकगणित सीखने का दबाव नहीं बनाया जाना चाहिए। 'प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के अच्छे कार्यक्रम का असर बच्चों के सर्वांगीण विकास पर पड़ता है।'

शिक्षा का अधिकार अधिनियम – 2009

नि:शुल्क और अनिवार्य बालशिक्षा का अधिकार अधिनियम – 2009 में कहा गया है कि समुचित सरकार विद्यालय पूर्व शिक्षा की व्यवस्था कर सकती है।

अनुच्छेद 11 में कहा गया है कि "प्राथमिक शिक्षा के लिए तीन वर्ष से अधिक आयु के बालकों को तैयार करने तथा सभी बालकों के लिए जब तक वे छह वर्ष की आयु पूरी करते हैं, आरंभिक बाल्यावस्था देखरेख और शिक्षा की व्यवस्था करने की दृष्टि से समुचित सरकार, ऐसे बालकों के लिए नि:शुल्क विद्यालय पूर्व शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक व्यवस्था कर सकेगी।"

राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देख-रेख और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) नीति – 2013

प्रारंभिक बाल्यावस्था देख-रेख और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) संरक्षित और अनुकूल वातावरण में देख-रेख, स्वास्थ्य, पोषण, खेलकूद और प्रारंभिक शिक्षा जैसे अभिन्न तत्वों को सम्मिलित करती है। यह पूरे जीवन के विकास और शिक्षण के लिए एक अपरिहार्य आधार है जिसका प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। ई.सी.सी.ई. को वरीयता दिया जाना और इसमें निवेश करना आवश्यक है क्योंकि यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आए सुविधाहीनता के चक्र को तोड़ने और असमानता को दूर करने के लिए सबसे अधिक कारगर उपाय है जो दीर्घकालिक सामाजिक और आर्थिक लाभ देता है।

राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देख-रेख और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) नीति सभी बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रसवपूर्व अवधि से छह वर्ष की आयु तक सतत रूप से समेकित सेवाएँ प्रदान करने की भारत सरकार की वचनबद्धता की अभिपुष्टि करती है। यह नीति प्रत्येक बच्चे की देख-रेख और प्रारंभिक अधिगम पर ध्यान केंद्रित करते हुए बच्चों की उत्तरजीविता, वृद्धि और विकास के लिए ठोस आधार सुनिश्चित करने के लिए एक व्यापक मार्ग प्रशस्त करती है। यह नीति बच्चे के स्वास्थ्य, पोषण, मनो-सामाजिक और भावात्मक आवश्यकताओं के बीच सहक्रियात्मक और परस्पर निर्भरता को स्वीकार करती है।

क्या है पूर्व प्राथमिक शिक्षा?

पूर्व प्राथमिक शिक्षा एक बाल-केंद्रित कार्यक्रम है जिसमें बच्चे खेल द्वारा ही सबसे अधिक सीखते हैं। खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास में अमूल्य योगदान देता है। विकास की दृष्टि से पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चे अपने प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा सर्वाधिक सीखते हैं।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप को रेखांकित करने के लिए निम्नांकित विशेषताएँ विचारणीय हैं —

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा 3–6 वर्ष के बच्चों के लिए है। यह शिक्षा स्थानीय परिवेश के अनुसार 3 से 6 वर्ष के मध्य में दो वर्ष की होनी चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास अर्थात् भाषायी, शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास के लिए उत्प्रेरक वातावरण प्रदान करती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों को प्राथमिक (औपचारिक) शिक्षा के लिए तैयार करती है, प्राथमिक शिक्षा का लघु रूप नहीं है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है जो बच्चों को पढ़ने-लिखने व गणित सीखने के लिए तैयार करता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव दिए जाते हैं जिससे उनमें सीखने की प्रक्रिया से संबंधित विकास होता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अनुभव बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करते हैं जिसके फलस्वरूप बच्चों में आंतरिक अनुशासन बढ़ता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कार्यक्रम योजना परिवर्तनशील व लचीली होती है जिसे बच्चों की रुचि, आयु व स्तर को ध्यान में रखकर बनाया जाता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है जो सामूहिक क्रियाकलाप के लिए प्रोत्साहित करता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा, परीक्षा उन्मुख कार्यक्रम नहीं है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा 3–6 वर्ष की अवस्था के बच्चे की विशेषताओं को समझने तथा उन्हें और अधिक पनपने का अवसर देती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रत्येक बच्चे के महत्त्व को समझने के लिए प्रेरित करती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा बालक-बालिका, दोनों के लिए समान रूप से लाभकारी है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों में सद्गुणों का विकास कर, उन्हें समाज उपयोगी नागरिक बनने में मदद करती है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने इस बात की पुष्टि की है कि 0–6 वर्ष की आयु में बच्चों के विकास की गति तीव्र होती है तथा यही आयु संस्कारों के निर्माण के लिए सबसे उपयुक्त होती है। यदि बच्चे के सर्वांगीण विकास में इस अवस्था का सदुपयोग न किया जाए तो इससे होने वाली क्षति कभी पूर्ण नहीं हो पाती। इस अवस्था में बच्चों की देख-रेख तथा शिक्षा पर ध्यान देने से ही भविष्य में देश को सुयोग्य एवं कर्मठ नागरिक मिल सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा (3–6 वर्ष) की आवश्यकता स्वाभाविक है।

3–6 वर्ष के बच्चों के लिए

- हमारे देश में बच्चों की एक बड़ी संख्या को शिक्षा, परिवार में समृद्ध एवं उपयुक्त शैक्षिक वातावरण न मिल पाने व उनकी समुचित देख-रेख और मार्गदर्शन न होने से संभव नहीं हो पाती।

कभी-कभी बच्चे गलत आदतें भी सीख लेते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा में स्वच्छता और स्वस्थ आदतों के विकास पर बहुत अधिक बल दिया जाता है, क्योंकि 3–6 वर्ष की अवस्था सबसे अधिक संवेदनशील होती है, अत: इस समय सीखी हुई आदतें प्राय: स्थायी होती हैं। स्वच्छता और स्वच्छ आदतें इस आयु में अच्छी प्रकार से सिखाई जा सकती हैं।

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत रोचक, मनोरंजक तथा उद्देश्यपूर्ण खेल-क्रियाओं के माध्यम से बच्चों में अच्छी आदतों एवं नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा बच्चों को विकासोन्मुख और समृद्ध वातावरण दे सकते हैं।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा शैक्षिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए परिवारों के बच्चों के विकास को गति मिल सकती है।
- रोचक एवं शिक्षाप्रद खेल-क्रियाओं के माध्यम से पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि को उत्पन्न करती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों में सुरक्षा व आत्म-विश्वास की भावना का विकास करने में सहायता करती है।
- छोटे बच्चों के बहुत से दोष/बीमारियाँ यदि शुरू में पता चल जाएँ, तो उनका इलाज होना सरल हो जाता है। यह केवल पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा ही संभव है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों में छिपी प्रतिभाओं और कौशलों को उभारने में सहायता मिलती है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चे के संपूर्ण जीवन की तैयारी है।

प्राथमिक शिक्षा में पूर्व प्राथमिक शिक्षा का योगदान

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार किया जा सकता है, क्योंकि प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले बच्चे शारीरिक, मानसिक और भाषायी विकास की दृष्टि से प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार नहीं होते।
- कई परिवारों में लड़कियों को प्राथमिक विद्यालय जाने से रोक दिया जाता है, क्योंकि उन्हें अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने के लिए घर पर ही रहना पड़ता है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्रों के खुल जाने से उनके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा की व्यवस्था हो जाती है और ये लड़कियाँ प्राथमिक विद्यालय जा सकती हैं।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा 'बालिका-शिक्षा' के प्रसार को बढ़ावा देकर शिक्षा के सार्वजनीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।
- जिन बच्चों को उचित पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हो जाती है, उनके विद्यालय में नामांकन और ठहराव की संभावना बढ़ जाती है।
- प्रारंभिक वर्षों में मिले उचित मार्गदर्शन से बच्चों के विकास व उनकी क्षमताओं को विकसित करने में सहायता मिलती है तथा प्राथमिक विद्यालय में बच्चे उचित रूप से समायोजन कर सकने में समर्थ होते हैं।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त बच्चे दूसरे बच्चों की अपेक्षा विषय सरलता से सीख पाते हैं। उनकी

शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ जाती है तथा फ़ेल होने की संभावना न के बराबर होती है।

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा 3–6 वर्ष के बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिभावकों और समुदाय को जागरूक बनाती है।

अभिभावकों व समुदाय के लिए

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम माता-पिता के सर्वप्रथम शिक्षक होने के दायित्व को बल देता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत अभिभावकों को अच्छी पूर्व प्राथमिक शिक्षा के महत्त्व विधि की जानकारी दी जाती है।
- अभिभावकों को ऐसी जानकारी दी जाती है जिसके द्वारा वे घर पर बच्चों में वांछनीय मूल्यों, संस्कारों व शिक्षा में सहायक गतिविधियों को कराने में समर्थ हो सकें।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम अभिभावकों को बच्चों के हित में उचित निर्णय लेने की योग्यता, नवीन कौशलों को सीखने की योग्यता के लिए प्रोत्साहित करता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में अभिभावकों की सहभागिता केवल गुणात्मक सुधार लाने के लिए ही आवश्यक नहीं, बल्कि केंद्र संचालन, संसाधन जुटाने, एवं बच्चों की प्रगति का मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करने के लिए भी आवश्यक है।
- बच्चों की औपचारिक शिक्षा (पढ़ना, लिखना व गणित) तथा शैक्षणिक भार को कम करने के लिए अभिभावक महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा अभिभावकों को यह समझाने में मदद करती है कि औपचारिक शिक्षा पर ज़ोर देना इस अवस्था में बच्चों के विकास के लिए हानिकारक हो सकता है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम बच्चों के लिए कार्य करने वाली स्वयंसेवी एवं सरकारी संस्थाओं, कार्यकर्ताओं, अभिभावकों एवं समुदाय को एक-जुट होकर प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होता है।

संक्षेप में, यह कार्यक्रम जीवनपर्यंत सीखने के लिए उत्तम नींव प्रदान करता है। इसीलिए यदि बच्चा बाद के वर्षों में अच्छे परिणाम प्रदर्शित करता है, तो शुरू में इस कार्यक्रम पर किया गया यह व्यय (खर्च) बहुत ही महत्वपूर्ण निवेश है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य

- बच्चे में स्वस्थ आदतों का विकास और व्यक्तिगत समायोजन के लिए प्रमुख आवश्यक कौशलों का विकास करना; जैसे – कपड़े पहनना, भोजन करना, सफ़ाई आदि।
- इसके द्वारा बच्चों में वांछित सामाजिक दृष्टिकोणों का विकास होता है, जिससे बच्चे खेलकूद और विभिन्न क्रियाओं में सहभागिता कर सकें तथा दूसरों के अधिकारों और विशेषाधिकारों के प्रति संवेदनशील बन सकें।
- अपने विचारों, भावनाओं तथा संवेगों को व्यक्त करने, समझने, स्वीकार करने तथा नियंत्रित करने में बच्चे की सहायता करके उनमें भावात्मक/संवेगात्मक परिपक्वता लाना।
- बच्चों में सौंदर्यबोध की भावना को बढ़ावा देना।
- बच्चों में जिज्ञासा जागृत करना तथा जिस वातावरण में वे रहते हैं, उसे समझने में मदद करना। बच्चे को भ्रमण, खोज तथा प्रयोग करने के अवसर देकर उसमें नवीन रुचियाँ जागृत करना।

- आत्माभिव्यक्ति के अवसर देकर बच्चे में स्वतंत्रता तथा सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना।
- अपने विचारों और भावनाओं को प्रवाह, स्पष्टता एवं शुद्धता के साथ व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की विधियाँ

पूर्व प्राथमिक शिक्षा 3–6 आयुवर्ग के बच्चों की विशेषताओं के आधार पर खेल-विधि (Play-way method) से दी जाने वाली शिक्षा है अर्थात् यह खेल और क्रियाकलाप पर आधारित शिक्षा है, जिसमें निम्न खेल एवं क्रियाकलाप बहुत ही महत्वपूर्ण हैं — खेल, शिशुगीत, कहानी, वार्तालाप, कठपुतली, गुड़िया का खेल, प्रयोग, अभिनय, प्रकृति में विचरण, संगीत व लयात्मक क्रियाएँ, खेल-सामग्री के साथ संज्ञानात्मक एवं भाषा-संबंधी क्रियाएँ तथा कक्षा के अंदर व बाहर के खेल।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में खेल का महत्त्व

- खेल विधि मुख्य रूप से बाल-केंद्रित (child-centered) विधि है जिसमें बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखा जाता है।
- खेलना बच्चों की स्वाभाविक प्रकृति है। खेल का मैदान हो, घर हो, बाज़ार हो, या अन्य कोई स्थान, बच्चे चुपचाप नहीं बैठ सकते। जो कुछ भी उनके हाथ लगता है, चाहे वह पत्थर हो, पत्ता हो या तिनका हो, वे उसे उठाकर खेलने लगते हैं। खेल उन्हें बहुत प्रिय होता है और खेलने में उन्हें बहुत आनंद आता है।
- प्राय: लोगों की यह धारणा है कि खेलने से समय नष्ट होता है। माता-पिता इस बात से डरते हैं कि खेल में बच्चे लड़ेंगे-झगड़ेंगे। खेलने से क्या फ़ायदा? कुछ लिखेंगे-पढ़ेंगे तो कुछ सीखेंगे भी। यह सोचकर बच्चों को खेलने के अवसर कम देते हैं। वास्तव में, बच्चों के काम और खेल अलग नहीं हैं। बचपन में खेल ही उनके सीखने का एकमात्र साधन है। खेल के माध्यम से बच्चे अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं, साथ ही खेल के माध्यम से बच्चे अपने आस-पास के संसार को देख और समझ सकते हैं। इससे बच्चों को अपने सामाजिक संबंधों एवं स्वस्थ आदतों को विकसित करने में भी सहायता मिलती है। इस प्रकार बच्चे के सभी पक्षों के विकास में सहायक होने के कारण खेल का बहुत अधिक महत्त्व है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा देने के लिए खेल एक प्रभावी साधन है, क्योंकि खेल से बच्चे जल्दी और अच्छा सीखते हैं। खेल-खेल में प्राप्त ज्ञान सुदृढ़ होता है।
- खेल बच्चों की पाँचों इंद्रियों को विकसित करने में सहायक होते हैं।
- खेल द्वारा बच्चे अपनी ज्ञानेंद्रियों और कर्मेंद्रियों दोनों का उपयोग करते हैं, उनकी माँसपेशियाँ दृढ़ होती हैं, समझ बढ़ती है, आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।
- खेल के माध्यम से बच्चे ठोस अधिगम-अनुभव प्राप्त करते हैं। संपूर्ण अधिगम प्रक्रिया में बच्चा एक निष्क्रिय प्राप्तकर्ता मात्र न रहकर स्वयं सक्रिय रूप से करके सीखने (Learning by doing) की क्रिया में भाग लेता है।
- खेल एक संतुलित क्रिया-प्रधान कार्यक्रम है, जिससे समस्त विकासात्मक उद्देश्यों की पूर्ति होती है। खेल बच्चों की अधिगम दक्षताओं;

जैसे — निरीक्षण, प्रयोग, समस्या-समाधान तथा सृजनात्मकता के विकास का पोषण करता है।

- खेल बच्चे के मानसिक और शारीरिक संतुलन बनाए रखने में भी सहायक होता है।
- खेल-क्रियाओं द्वारा बच्चों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के भीतर ही उनकी क्षमताओं और रुचियों को ध्यान में रखकर, उनका समुचित विकास किया जा सकता है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के लिए आवश्यक खेल-सामग्री

बच्चे क्रियाशील होते हैं। वे कुछ-न-कुछ करते रहना चाहते हैं। इसी से वे विविध अनुभव प्राप्त करते हैं। इसके लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्रों में विभिन्न प्रकार की खेल-सामग्री की आवश्यकता होती है। बाल-केंद्रित व आनंददायी शिक्षण विधियाँ तथा रोचक क्रियाकलाप सामग्री, विद्यालय के वातावरण को आकर्षक एवं रुचिकर बनाती है और बच्चों के नामांकन, ठहराव तथा प्रतिधारण क्षमता में वृद्धि करती है। उपयोगी खेलों व क्रियाओं की व्यवस्था करने के लिए महँगी सामग्री की आवश्यकता नहीं है। परंतु क्रियाकलाप को प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ साधारण उपकरण व सामग्री होना ज़रूरी है। कुछ आवश्यक खेल सामग्री आगे है–

- छोटी-बड़ी गेंद, रंगीन मनके, पिरोने के लिए धागा, पुराने टायर, झूले, संतुलन बनाए रखने के लिए उपकरण, ब्लॉक्स, डोमिनोज़, फ़्लैश काड्र्स, कठपुतलियाँ, विषय-संबंधी सामग्री, शिशु गीतों और कहानियों का संकलन, गुड़िया घर, पज़ल्स आदि।

हमारे खेल-खिलौने, गीतों तथा कहानियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत अधिगम के लिए आधार प्रदान कर सकते हैं। इसके अलावा आस-पास के परिवेश में उपलब्ध सामग्री का प्रयोग करके आकर्षक खेल-सामग्री बनाई जा सकती है; जैसे– मिट्टी, पत्ते, फूल और अन्य प्राकृतिक वस्तुएँ। वस्तुएँ जिन्हें आप स्वयं बटोर कर खेल-सामग्री बना सकते हैं; जैसे – पुराने डिब्बे, कागज़, दियासलाई की खाली डिब्बियाँ, कड़े के टुकड़े, आदि। पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में आस-पास के पर्यावरण एवं प्रतिदिन के जीवन की उपयोगी जानकारी का समावेश होना चाहिए।

सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने व निरंतरता के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा के आयोजन तथा घर के वातावरण के बीच जुड़ाव होना बहुत ज़रूरी है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के व्यक्तित्व को कृत्रिम बनाने के बजाय उसकी स्वाभाविकता को बनाए रखने पर अधिक ज़ोर देने की ज़रूरत है। संक्षेप में, कार्यक्रम योजना का आधार सामाजिक समन्वय एवं एकता या एकात्मकता के साथ-साथ भौतिक एवं भावात्मक जुड़ाव होना चाहिए।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में परिवार व शिक्षिका की भूमिका

बच्चे के विकास में उद्दीपन का विशेष महत्त्व है। यहाँ उद्दीपन से तात्पर्य है – प्रेरणा। बच्चा उचित अवसरों को पाकर कुछ क्रिया-प्रतिक्रिया करता है। इस क्रिया-प्रतिक्रिया से वह सीखता है और सीखने से उसके विकास को एक गति मिलती है। जीवन में बच्चे का पहला संपर्क अपने माता-पिता के साथ

होता है। बच्चे का अधिकतर समय परिवार के साथ व्यतीत होता है। यह तो माता-पिता का फर्ज़ है कि वे बच्चे का पालन-पोषण करें, किंतु पालन-पोषण केवल पौष्टिक भोजन और साफ़-सुथरे कपड़ों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। माता-पिता यह भूल जाते हैं कि बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

गृह-शिक्षक के रूप में अभिभावक

कुछ युवा माता-पिता प्रारंभिक बाल्यावस्था की उत्प्रेरक गतिविधियों की महत्ता व प्रासंगिकता को नहीं मानते, तो कुछ माता-पिता उन्हें यांत्रिक रूप से प्रयोग में लाते हैं, तो कुछ को इनका ज्ञान ही नहीं होता और वे बच्चों को घर पर अनावश्यक औपचारिक शिक्षा के बोझ तले दबा देते हैं।

सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण संयुक्त परिवारों का विघटन होता जा रहा है तथा नौकरी की तलाश में लोग मूल स्थान छोड़ते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप, बच्चों के पालन-पोषण के परंपरागत तरीके तेज़ी से बदलते जा रहे हैं। अब पुराने खेल, गीत, कहानियाँ, घरेलू खिलौने जो बच्चों के माता-पिता तथा घर के बड़े-बूढ़े, दादा-दादी आदि उपयोग में लाते थे, उनका उपयोग लगभग समाप्त होता जा रहा है।

संयुक्त परिवार से एक और लाभ भी था – परिवार में सगे संबंधियों के बच्चे भी होते थे। सब मिलकर खाते-पीते, खेलते और एक-दूसरे से सीखते भी थे। आज के छोटे (लघु) परिवार में इन सबकी कोई संभावना नहीं।

अभिभावकों को चाहिए कि अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से प्राप्त बाल विकास संबंधित खेल, क्रियाकलाप, कहानियाँ और गीतों का प्रयोग बच्चों के साथ करें। बच्चा प्रतिदिन परिवार के सदस्यों के साथ अनेक प्रकार की पारस्परिक क्रियाएँ करके अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा प्राप्त करता है।

माता-पिता अगर बच्चे को उसके हाल पर छोड़ दें तो बच्चा अपने वातावरण में जो कुछ देखेगा, सही या गलत, उसे अपना लेगा, क्योंकि उसमें अभी इन दोनों में अंतर करने की क्षमता का अभाव होता है। परंतु माता-पिता जब घर में एक प्रेमपूर्ण सीखने का वातावरण बनाते हैं तो बच्चों के भीतर सुरक्षा और जिज्ञासा की भावना पैदा होती है। अत: शिक्षिका तथा माता-पिता को मिलकर यह प्रयास करना चाहिए कि बच्चा सीख सके और आगे बढ़ सके। माता-पिता की सहभागिता से अभिप्राय है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा के नियोजन और क्रियान्वयन में वे आगे बढ़कर शिक्षिका की सहायता करें और बच्चे के अभिभावक की भूमिका को अधिक सफलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से निभाएँ। कक्षा में 'थ्री आर्स' सीखने पर विशेष बल दिया जाता है। इस तरह के तरीके प्रयोग करने से बच्चे तो बोझ तले दबे ही रहते हैं, माता-पिता दबाव में रहते हैं। बच्चे के जीवन को उपयुक्त साँचे में ढालने के लिए शिक्षक एवं माता-पिता की अहम भूमिका है। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चे पर अनावश्यक दबाव न डालें, बल्कि उनके साथ खेलें। खेल-खेल में ही बच्चे बहुत कुछ सीखते जाते हैं। साथ ही माता-पिता को चाहिए कि शिशु उद्दीपन की पर्याप्त जानकारी प्राप्त करके बच्चों का उद्दीपन सार्थक एवं प्रभावशाली बनाएँ।

बच्चे को प्रोत्साहित व प्रेरित करने के लिए माता-पिता को घर पर निम्नलिखित बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए—

- बच्चे के साथ गुणात्मक समय (quality time) बिताएँ।
- बच्चे के साथ बातें करें। बच्चे को अधिक से अधिक बोलने का अवसर दें।
- बच्चे को प्यार और सुरक्षा की भावना दें।
- बच्चे को गीत, कविता और कहानियाँ सुनाएँ और सुनें।
- बच्चे के साथ उसका साथी बनकर खेलें।
- उन्हें उचित मार्गदर्शन दें।
- बच्चे को अधिक रोकें–टोकें नहीं।
- बच्चे की बात धैर्य से सुनें।
- बच्चे को खिलौने और उसके आयु के अनुसार चित्र-पुस्तकें दें।
- बच्चे को घर के बाहर घुमाने ले जाएँ और आस-पास की चीज़ों के बारे में बातचीत करें। बच्चों के चारों तरफ के वातावरण में जो परिवर्तन हो रहा है, उनकी तरफ उसका ध्यान दिलाएँ।
- बच्चे की तुलना दूसरे बच्चों के साथ न करें। हर बच्चे की क्षमता भिन्न होती है।
- क्रियाकलाप व खेल बच्चे की आयु, स्तर और क्षमता के अनुसार दें।
- क्रियाकलाप/खेल/खिलौने ऐसे हों, जो बच्चे के विकास की दृष्टि से उपयोगी हों।
- आपका व्यवहार ऐसा हो कि बच्चा उसका अनुकरण करे।
- बच्चे के प्रश्नों के उत्तर दें और उसमें खोजबीन की आदत डालें। बार-बार प्रश्न पूछने पर उसे डाँटे नहीं।
- घर का वातावरण तनाव से मुक्त रखें, ताकि बच्चा सुरक्षित महसूस करे।
- बच्चों को अपने-आप अनुभव करके सीखने का मौका दें, क्योंकि वे स्वयं चीज़ों को छूकर, सूँघकर, चखकर, ध्यानपूर्वक देखकर, सीखना चाहते हैं।

क्रियाकलाप व खेलों से बच्चे को माता-पिता व घर के अन्य वयस्कों के साथ रहने एवं आदान-प्रदान के अधिक अवसर मिलते हैं। बड़े लोगों के साथ अर्थपूर्ण समय (quality time) बिताने से बच्चे को निम्नलिखित लाभ होते हैं –

- बच्चे में सुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है।
- बच्चे को अपने अस्तित्व का बोध होता है।
- सबके साथ सामंजस्य स्थापित करना सीखता है।
- दूसरों के प्रति विश्वास की भावना जाग्रत होती है।
- उसमें आत्मविश्वास की भावना सबल होती है।
- आत्माभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं।
- बच्चे में उत्सुकता और उत्साह की वृद्धि होती है।
- सोचने-समझने, कल्पना शक्ति विकसित करने के अवसर मिलते हैं।
- और अधिक जानने तथा सीखने की जिज्ञासा बढ़ जाती है।
- अपने वातावरण के प्रति आकर्षण बढ़ता है।
- अन्य लोगों के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न हो जाती है।
- माता-पिता व अन्य वयस्कों द्वारा पौराणिक कथाएँ (जैसे – रामायण, महाभारत एवं जातक कथाएँ) आदि सुनकर नैतिक मूल्यों एवं अच्छे विचारों का निर्माण होता है। माता-पिता को चाहिए कि इन कथाओं से रोचक प्रसंग लेकर सरल भाषा में सुनाएँ। समय का अभाव होने पर भी माता-पिता का यह कर्तव्य है कि वे समय निकालकर बच्चों

को कहानी अवश्य सुनाएँ, क्योंकि कहानी सुनने से बच्चों को आनंद मिलता है, उनकी कल्पनाशक्ति का विकास होता है, उनका ज्ञान बढ़ता है और वे नए-नए शब्द भी सीखते हैं। इसके अतिरिक्त उनकी पुस्तकों के प्रति रुचि भी विकसित होती है।

- जब माता-पिता या कोई भी परिवार का सदस्य बच्चों के साथ मिलकर गाता और खेलता है, तो बच्चे उन्हें अपने नज़दीक पाकर बहुत खुश होते हैं। वे अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं। लेकिन आजकल जीवन की गति इतनी तेज़ हो गई है कि माता-पिता को बच्चों के साथ गाने व खेलने का समय कम ही मिल पाता है। जीवन की व्यस्तता के कारण हम इन प्रचलित परंपरागत गीतों को भूलते जा रहे हैं। माता-पिता को इन्हें फिर से बच्चों के जीवन में लाने का प्रयास करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यस्त होने के बावजूद भी समय निकालकर अपने प्रांत में प्रचलित परंपरागत गीतों, खेलों को बच्चों के साथ अवश्य खेलें, क्योंकि अच्छे संस्कारों की नींव माता-पिता द्वारा ही पड़ती है।

यदि बच्चे को प्रारंभिक वर्षों में पर्याप्त भोजन, प्रेम और उत्प्रेरणा मिले, तो उसका प्रभाव उसके भावी जीवन और शिक्षा पर पड़ेगा। साथ ही स्वस्थ एवं उत्पादक जीवन-कला के वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने में उसे अवश्य सहायता मिलेगी।

- उचित खेल-क्रियाओं द्वारा माता-पिता और बच्चे एक-दूसरे को ठीक से समझ सकते हैं।
- अगर माता-पिता बच्चे को आस-पास के वातावरण को समझने में सहायता दें, तो बच्चे का सामान्य ज्ञान बढ़ेगा और शुरू से ही बच्चे के प्रश्नों का तर्कपूर्ण या सही उत्तर दें, तो दृष्टिकोण वैज्ञानिक बनेगा।
- समुचित उद्दीपन क्रियाओं के माध्यम से शिशुओं में जिज्ञासा प्रवृत्ति जागृत की जा सकती है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में शिक्षिका की भूमिका

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में केंद्र-बिंदु बच्चा है और शिक्षिका उसकी पथ-प्रदर्शिका है। प्रारंभिक बाल शिक्षा केंद्र में आने वाला बच्चा अपने घर की सुरक्षा तथा घर से प्राप्त होने वाली मान्यताओं और सुविधाओं को छोड़कर आता है, इसलिए शिक्षिका का दायित्व है कि वह—

- सहनशील रहे।
- बच्चों को माँ का प्यार दें, ताकि बच्चे केंद्र में माँ की अनुपस्थिति में भी सुरक्षित महसूस करें।
- संस्कृति के संपोषण तथा संप्रेषण के लिए भाषा, मूल माध्यमों में से एक है। बच्चों तथा अभिभावकों में विश्वास की भावना जागृत करने के लिए उनकी मातृभाषा में बात करना अत्यंत प्रभावकारी है। अत: शिक्षिक/शिक्षिकाएँ कोशिश करें कि वे बच्चों से उनकी मातृभाषा में बात कर अपनी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावकारी बना सकें।
- विभिन्न स्थानीय सामग्रियों/वस्तुओं द्वारा अधिगम के लिए वातावरण तैयार करें।
- हमारी भावनाएँ, हमारे विश्वास एवं मूल्यों से प्रभावित होती हैं। अपनी भावनाओं को बच्चे पर थोपें नहीं, अपितु बच्चे की योग्यता एवं क्षमता में विश्वास करें तथा आगे बढ़ने में उसकी सहायता करें।
- बच्चों को समाधान ढूँढ़ने के अवसर प्रदान करें और उसे अपनी गति से सीखने दें।

- बच्चे को किसी भी ऐसे नाम से न बुलाएँ, जिससे बच्चे के प्रति आपके विश्वास में कमी झलकती हो।
- बच्चे के समक्ष बातचीत के आदर्श तरीके प्रस्तुत करें।
- बच्चों का सम्मान करें। इससे उनमें आत्मसम्मान का विकास होता है।
- हतोत्साहित करने वाले शब्दों व व्यवहार का प्रयोग न करें।
- बच्चा जैसा है, वैसा ही स्वीकारें।
- बच्चे को अपनी क्षमताओं का पता चलने दें, उसके प्रयासों को प्रोत्साहन दें और संप्राप्ति पर सराहना करें।
- बच्चे की गलतियाँ ढूँढ़ने के स्थान पर उसकी क्षमताओं, योग्यताओं एवं सामर्थ्य पर ध्यान दें।
- बच्चे को सही कार्य करने पर, चाहे वह छोटा-सा ही क्यों न हो, उसकी प्रशंसा करें।
- बच्चे को सही और गलत का अंतर सिखाएँ। शिष्टाचार तथा स्वस्थ आदतों के विकास में बच्चे में सही और गलत का ज्ञान होना आवश्यक है।

ग्रंथ सूची

एन.सी.ई.आर.टी. 2010. राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र–*प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

कौल, विनीता. 1976. *प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

यादव, पद्मा. 2015. *एक्ज़ेम्प्लर गाइडलाइंस फ़ॉर इंप्लीमेंटेशन ऑफ़ अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन करीकुलम*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

सेन गुप्त, मंजीत. 2013. *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा*. पी.एच.आई. लर्निंग प्रा. लि., दिल्ली.

सोनी, रोमिला. 2003. *पूर्व प्राथमिक शिक्षा–एक परिचय*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.